नौंवा अध्याय

उपसंहार

9. उपसंहार

मेरे इस शोध विषय 'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में रामभक्ति और उसकी प्रासंगिकता' पर लगभग चार-पाँच वर्षों के अध्ययन, साहित्य और शास्त्र के विभिन्न ग्रन्थों के अनुशीलन, पठन, मनन तथा विषयगत विवेचन के उपरांत निष्कर्ष रूप में मैंने पाया है कि 'रामचरितमानस' और 'सप्तकाण्ड रामायण' दोनों ही महाकाव्य निश्चय ही युग के दो महानतम कीर्ति स्तंभ हैं, जो युगों-युगों तक इसी प्रकार से लोगों के हृदय में केवल विराजित ही नहीं होंगी, बल्कि सदा-सर्वदा अपने गुण अनुरूप इसी तरह अपने हृदय सागर में संचित भक्ति, आदर्श, ज्ञान और नीति-नियमों के आलोक में आगे भी समाज का पथ प्रदर्शन करती रहेंगी । ये दोनों गुणक-काव्य इतने ही महान हैं कि इसके पठन या श्रवण मात्र से इसके पात्रों के महान गुणों तथा आदर्श को कोई भी अपने गुण-समूहों में धारण करने लगेगा । जहाँ एक ओर ये दोनों महानतम महाकाव्य 'रामचरितमानस' और 'सप्तकाण्ड रामायण' भक्ति का अलंकार हैं, जो किसी भी प्राणी को अपने ज्ञान और सिद्धान्त से सुशोभित कर देती हैं, वहीं दूसरी ओर इन ग्रंथों में निहित जीवनोपयोगी नीतियाँ, आदर्श तथा ज्ञान का भंडार वर्तमान में सभी मानव-जाति का पथ प्रदर्शन करते हुए उसका कल्याण करती हैं तथा भविष्य में भी इसी प्रकार से उनका कल्याण ही करती रहेंगी ।

'रामचरितमानस' भक्त शिरोमणि अद्वितीय काव्य प्रतिभा के धनी महाकवि तुलसीदास की श्रेष्ठतम रचना है जिसमें एक ओर भक्ति का वह आदर्श रूप है जो किसी भी भक्त के हृदय में करुणा, सेवा, भक्ति, समर्पण तथा दैन्य भावना का ऐसा आदर्श तत्व प्रदान करती है जिसकी सहायता से कोई भी भक्त अपने जीवन का उद्धार समझता है । ठीक इसी प्रकार से 'सप्तकाण्ड रामायण' जैसे महानतम महाकाव्य की रचना

करने वाले कवि शिरोमणि, असम प्रांत के भक्ति-संवाहक काव्यकार तथा असमीया काव्य जगत के महानतम अग्रदूत कविराज माधव कंदली ने भी साधारण जनता की सहज भाषा असमीया में रामकथा सौंपकर समस्त लोक-जगत का उद्धार किया है । कविराज माधव कंदली ने पूर्वोत्तर भारत के असम प्रांत में भक्ति की एक ऐसी ज्योति जलाई है जो युग-युगांतर के लिए अमर हो गयी । यह रचना केवल अमर ही नहीं बल्कि इस महाकाव्य की भक्ति और जीवनोपयोगी नीतियाँ तथा आदर्श से समस्त लोक-जगत को भक्ति और सत्य का पथ दिखाने तथा उस पर सभी कठिनाइयों का सामना करते हुए आगे बढ़ने का साहस भी दिलाती हैं ।

'सप्तकाण्ड रामायण' में राम-भक्ति की भावमयी धारा प्रवाहित है । यहाँ भी भक्ति में पूर्ण समर्पण की बात देखने को मिलता है । यहाँ भी कविराज शिरोमणि माधव कंदली कहते हैं कि भक्ति करने से मुक्ति भी प्राप्त होता है । कविराज शिरोमणि माधव कंदली कहते हैं कि जो भी मूर्ख व्यक्ति भक्ति नहीं करता वह जीवित रहते हुए भी मरे हुए के ही समान है । इस भक्ति से ही सबकुछ संभव है । इसीलिए सभी को हरि नाम की प्रेरणा देते हैं । 'रामचरितमानस' तथा 'सप्तकाण्ड रामायण' दोनों ही महाकाव्यों में राम-भक्ति के आदर्श रूप का दिग्दर्शन होता है । यहाँ केवेल रामभक्ति की आभा ही विराजित नहीं है, जीवन के नीति-नियमों, सिद्धांतों, आदर्शों आदि का जो प्रकाश यहाँ फैला हुआ है वह मनुष्य जीवन को अज्ञानता, अंधविश्वास, अपकीर्ति आदि के गहन अंधकार से उबारता है ।

'रामचरितमानस' के राम राज्य सुख में तनिक भी आसक्त नहीं होते । पिता के वचन का ज्ञान होते ही अकेले ही वे वन को निकल जाने को प्रस्तुत हो जाते हैं । उन्हें तो और भी अधिक प्रसन्नता होती है कि उनके प्राणप्रिय भरत राज्य करेंगे । 'सप्तकाण्ड रामायण' में भी राम को राज्य भोग की तनिक भी रुचि न थी। यहाँ भी राम तिनके की भाँति सम्पूर्ण राज्य भरत को समर्पित कर वे वन को निकल जाते हैं । राम के व्यक्तित्व का यहाँ भी आदर्श मर्यादित रूप प्रस्तुत हुआ है जब वे वन को जाते समय सभी को अपने सारे

आभूषण, संपत्ति तथा बर्तनों का भी दान कर देते हैं। यहाँ भी राम वन जाने की आज्ञा पाकर संकोच नहीं करते। बल्कि राम तो यह कहते हैं कि यह आज्ञा स्वयं राजेश्वर पिता दशरथ देते तो उनको और भी अधिक प्रसन्नता होती।

पुनः राम माता कैकयी को आश्वासन देते हुए कहते हैं कि माताएँ सब सुख से रहें। रही बात वनवास की तो वे भरत के लिए प्राण भी दे सकते हैं, राज्य त्यागना कौन सी बड़ी बात है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि 'रामचरितमानस' की ही तरह 'सप्तकाण्ड रामायण' में भी रामभक्ति का मर्यादित आदर्श तथा महान रूप प्रकट हुआ है।

'रामचरितमानस' और 'सप्तकाण्ड रामायण' की प्रासंगिकता भी राम-भक्ति की ही भाँति समस्त मानव जाति का कल्याण कर उसका पथ प्रदर्शन करती हैं। प्रासंगिकता शब्द से आशय दोनों ग्रंथों में उल्लेख्य निति-नियम, आदर्श, सिद्धान्त, जीवनपयोगी शिक्षाएँ तथा कर्तव्य, धर्म, न्याय, ज्ञान-अज्ञानता आदि की शिक्षा की वर्तमान भविष्य में आवशयकता से है। ये शिक्षाएं इन दो महानतम महाकाव्यों में इस प्रकार से मिलती हैं जैसे सागर में मोती। पाठक अपने ज्ञान और पठन की गहराई में उतरकर मोती को प्राप्त कर लेता है। ये मोती मानव समाज को जीवन की अनमोल शिक्षाएँ तथा प्रेरणाएँ देती हैं तथा उन बातों को सीखा जाती हैं जो किसी भी मानव के जीवन में बड़ी ही लाभप्रद हैं।

'रामचरितमानस' में जिस प्रकार से गुरु ब्राह्मणों के प्रति सम्मान तथा सेवा का भाव वर्णित है वही भाव तथा सम्मान 'सप्तकाण्ड रामायण' में भी वर्णित है। स्त्री-धर्म तथा मर्यादा का जो उदाहरण स्त्री स्वभाव में गुण रूप में विद्यमान 'रामचरितमानस' के पात्रों में मिलता है वही गुण तथा आदर्श 'सप्तकाण्ड रामायण' के पात्रों में भी निहित है। 'रामचरितमानस' में जिस आदर्श गृहस्थ-धर्म का दिग्दर्शन होता है, वही आदर्श

गृहस्थ जीवन यहाँ 'सप्तकाण्ड रामायण' में भी उपलब्ध है। जैसे 'रामचरितमानस' में विश्वामित्र के आगमन पर उनका पूजन तथा सत्कार राजा दशरथ स्वयं करते हैं ठीक इसी प्रकार से 'सप्तकाण्ड रामायण' में भी राजा दशरथ अपने अतिथि विश्वामित्र का पूरे साज-समाज के साथ विनम्रतापूर्वक आदर करते हैं। भ्रातृ-प्रेम का जो आदर्श रूप 'रामचरितमानस' में प्रस्तुत हुआ है वही भ्रातृ-प्रेम 'सप्तकाण्ड रामायण' के पात्रों- राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न आदि में उपलब्ध है।

इस प्रकार से निश्चित तौर पर इस शोध विषय "'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में राम-भक्ति और उसकी प्रासंगिकता" शीर्षक का अध्ययन करने पर यह कहा जा सकता है कि 'रामचरितमानस' और 'सप्तकाण्ड रामायण' दोनों ही महाकाव्य भक्ति और प्रासंगिकता की वह आदर्श पृष्ठभूमि है जिसकी फ़लक पर बैठकर अथवा इसका पाठ कर के कोई भी जीव भक्ति और आदर्श जीवन की गंगा स्वरूपिणी अमृत रस में स्नान कर सकता है। इस स्नान में उसे राम-भक्ति का फल तो प्राप्त होगा ही, साथ ही जीवन के बहुत ऐसे ज्ञान-विज्ञान, निति-नियम तथा आदर्श के प्रति जागरूकता भी बढ़ेगी और उसका जीवन भी सुनिर्मल होगा।